

संजीवनी का सच क्या है?

डॉ. ओ.पी. जोशी व डॉ. जयश्री सिक्का

वाल्मिकी रामायण में दिए विवरण के मुताबिक संजीवनी का पौधा रात में चमकता है। लेकिन राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने एक अन्य पौधे को संजीवनी माना है। तो संजीवनी चीज़ क्या है?

पौराणिक कथा के अनुसार त्रेतायुग में राम-रावण युद्ध के दौरान घायल लक्ष्मण की बेहोशी दूर करने हेतु संजीवनी बूटी का उपयोग किया गया था जिसे हनुमान हिमालय पर्वत से लाए थे। हनुमान को प्रसिद्ध वैद्य सुषेण ने बताया था कि रात्रि में जिस पौधे से प्रकाश निकले वही संजीवनी बूटी है।

महर्षि वाल्मिकी ने रामायण में लगभग 200 प्रकार की वनस्पतियों का वर्णन किया है जिसमें से कुछ आज भी पाई जाती हैं एवं औषधि के रूप में उपयोगी हैं। कुछ वनस्पतियां ऐसी भी हैं जिनके सही पर्याय नहीं मिलते हैं यानी या तो वे विलुप्त हो गईं या उनके सही नामों को भुला दिया गया। इन कारणों से उन वनस्पतियों की पहचान आज भी मुश्किल है। इन वनस्पतियों में संजीवनी, विशल्यकरणी, संधानकरणी एवं सवर्णकरणी आदि प्रमुख हैं।

संजीवनी एवं संधानकरणी का अंतिम विवरण राजकवि बलाल ने 10वीं सदी में अपने ग्रंथ भोज प्रबंध में दिया था। इसमें बताया गया है कि राजा भोज के सिर की शल्य क्रिया करके कोई गठान निकाली गई थी और संधानकरणी से घाव ठीक करके संजीवनी की मदद से उन्हें होश में लाया गया था।

लक्ष्मण के इलाज हेतु चार प्रकार की वनस्पतियों के उपयोग का जिक्र है। प्रथम वे वनस्पतियां थीं जो मांसपेशियों को शिथिल कर देती हैं ताकि लगा हुआ तीर आसानी से निकाला जा सके। दूसरी वे वनस्पतियां थीं जो तीर निकलने के बाद घाव के निशान को मिटाएं। तीसरी वे थीं जो जल्दी घाव भरने में सहायक हों एवं चौथी वे जो मूर्छा या बेहोशी को हटाएं। संभवतः यह चौथी प्रकार की

वनस्पति ही संजीवनी थी।

संजीवनी की खोज में वैज्ञानिकों एवं वनस्पतिज्ञों की काफी रुचि रही है एवं समय-समय पर इसकी खोज के दावे भी किए गए हैं।

लगभग 18-19 वर्ष पूर्व 1989 में बैतूल निवासी डॉ. जान वेसली मकबूल ने गांव बोरादेही से दूर जंगलों में घूमते समय एक पौधा देखा जो चमक रहा था। पौधे के चमकने की यह क्रिया लगभग 2-3 घंटे तक जारी रही। डॉ. मकबूल को आश्चर्य हुआ। जहां चमकता पौधा दिखाई दिया था वहां उन्होंने एक निशानी रख दी ताकि पौधे को भविष्य में भी पहचानने में भूल न हो। अगस्त एवं सितम्बर माह की रात्रि में जाकर डॉ. मकबूल ने इस पौधे का अवलोकन अपनी रखी निशानी के आधार पर लगातार किया। चमकने वाले कुछ पौधे निशानी के आसपास भी देखे गए।

अक्टूबर माह में डॉ. मकबूल ने अपने अवलोकन की जानकारी बैतूल एवं छिंदवाड़ा के कलेक्टरों को दी एवं तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी को भी पत्र लिखकर भेजी। छिंदवाड़ा कलेक्टर के आदेश पर डॉ. मकबूल इस पौधे का नमूना लेकर आए एवं स्थानीय वन अधिकारी एवं पत्रकारों को बताया। डॉ. मकबूल के अवलोकन के अनुसार इस पौधे से प्रकाश निकलकर चमकने की प्रक्रिया केवल अगस्त, सितंबर एवं अक्टूबर में ही होती है, बाद में धीरे-धीरे कम होकर समाप्त हो जाती है।

कुछ राष्ट्रीय समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में यह घटना उस समय सुर्खियों से प्रकाशित की गई। लेकिन फिर यह बात आई-गई हो गई। उस समय इतने टीवी

चैनल्स नहीं थे अन्यथा कोई-न-कोई चैनल इसका लाईव प्रसारण करता एवं देश-विदेश में वैज्ञानिक एवं वनस्पतिज्ञ इसे देख पाते एवं सही पहचान का प्रयास करते।

यदि चमकना ही संजीवनी का प्रमुख गुण माना जाए तो उत्तराखंड में पाई जाने वाली कुछ घास की जड़ें भी अंधेरे में रेडियम की भांति चमकती हैं। घास की इन प्रजातियों को स्थानीय भाषा में गुड़िया, महवलिया एवं तुअड़िया आदि कहते हैं।

हाल ही में लखनऊ स्थित राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने बताया है कि संजीवनी पौधे की यह विशेषता होती है कि वह सूखने पर भी नहीं मरता एवं थोड़ी-सी नमी मिलने पर फिर तरोताज़ा होकर जीवन यापन करने लगता है। संजीवनी के इस गुण को महत्ता देकर चमकने वाली बात भुला दी गई।

यहां के वैज्ञानिकों ने *सिलेजिनेला ब्रायोटेरिस* को संजीवनी बताया है। यह पौधा वनस्पति वर्गीकरण में टेरिडोफाइट समूह में आता है। इस समूह की वनस्पतियों की उत्पत्ति लगभग तीन अरब वर्ष पूर्व कार्बोनीफेरस युग में हुई थी।

वनस्पति शास्त्र की पुस्तकों में दिए वर्णन के अनुसार *सिलेजिनेला* दुनिया भर में पाया जाता है एवं इसकी लगभग 750 प्रजातियां हैं। ज़्यादातर प्रजातियां पहाड़ों पर नम एवं छायादार स्थानों पर पाई जाती हैं। कुछ प्रजातियां सूखे स्थानों पर भी पाई जाती हैं जिन्हें मरुद्भिद कहते हैं। इनमें *सिलेजिनेला लेपिडोफीला* एवं *सिलेजिनेला रुपेस्ट्रीस* प्रमुख हैं। ये प्रजातियां शुष्क अवस्था में सिमटकर एक छोटी गेंद या गोली के समान हो जाती हैं किंतु नमी के सम्पर्क में आने पर फैलकर पूर्वावस्था प्राप्त कर लेती हैं। राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक इन प्रजातियों को ही संजीवनी मान रहे हैं।

सिलेजिनेला में कोई चमक नहीं होती है, जैसा संजीवनी के बारे में बताया जाता है। इसके अलावा, वनस्पति शास्त्र की किसी भी उपलब्ध पुस्तक में सिलेजिनेला के किसी औषधि गुण का उल्लेख नहीं है।

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक सिलेजिनेला की इन्हीं प्रजातियों का अध्ययन एक पंचवर्षीय योजना बनाकर इस आधार पर कर रहे हैं कि इन प्रजातियों की पुनर्जीवित होने की क्षमता अनुवांशिक आधार पर किसी जीन से नियंत्रित होगी। इस जीन को पृथक कर यदि अन्य पौधों में डाला जाए तो उनमें भी पुनर्जीवित होने की क्षमता आ सकती है। इस जीन को यदि गेहूं एवं धान के पौधों में डाला जाए तो वे सूखा प्रतिरोधी बन सकते हैं।

संजीवनी का पौधा चाहे जो रहा हो परंतु यदि सिलेजिनेला की प्रजातियों से पुनर्जीवन क्षमता का जीन पृथक कर अन्य उपयोगी फसलों में सफलता पूर्वक डाला जा सके तो निश्चित ही भारतीय खेती के लिए यह किसी संजीवनी से कम नहीं होगा। भोपाल स्थित राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय भी संजीवनी पर अनुसंधान कर रहा है। जल्दी ही परिणाम की उम्मीद है। (*स्रोत फीचर्स*)

वर्ग पहेली 43 का हल

प	व	न	च	क्की				का
	ज्र		वु		मा	ता	दी	न
	पा		भुं		ल		प	
चि	त		ज	ल	वा	यु		प
म		र		ह		ग		रा
नी		वि	चा	र	क		अ	स्त
	सां		वां		ट		ना	
सु	चा	ल	क		ह		मि	
ई				क	ल	म	का	री